[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2142 **H**

Unique Paper Code : 62057638

Name of the Paper : विशेष अध्ययन: एक प्रमुख साहित्यकार प्रेमचंद

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) दुखी अपने होश में न था। न जाने कौन सी गुप्त शक्ति उसके हाथों को चला रही थी। वह थकन, भूख कमजोरी सब मानो भाग गई। उसे अपने बाहुबल पर आश्चर्य हो रहा था। एक-एक

चोट वज्र की तरह पड़ती थी। आधे घंटे तक वह इसी तरह उन्माद की दशा में हाथ चलाता रहा, यहाँ तक कि लकड़ी बीच से फट गई- और दुखी के हाथ से कुल्हाड़ी छूटकर गिर पड़ी। इसके साथ वह भी चक्कर खाकर गिर पड़ा। भूखा, प्यासा, थका हुआ शरीर जवाब दे गया।

अथवा

शंकर ने विप्र जी के यहाँ 20 वर्ष तक गुलामी करने के बाद इस दुस्सार संसार से प्रस्थान किया। 120 रु. अभी तक उसके सर पर सवार थे। पंडित जी ने उस गरीब को ईश्वर के दरबार में कष्ट देना उचित न समझा, इतने निर्दयी न थे। उसके जवान बेटे की गर्दन पकड़ी। आज तक वह विप्रजी के यहाँ काम करता है। उसका उद्धार कब होगा, होगा भी या नहीं, ईश्वर ही जाने।

(ख) नगर की जनता अब उस दशा में न थी कि उस पर कितना ही अन्याय हो और वह चुपचाप सहती जाए। उसे अपने स्वत्व का ज्ञान हो चुका था, कि उन्हें भी आराम से रहने का उतना ही अधिकार है, जितना धनियों को। एक बार संगठित आग्रह की सफलता देख चुके थे। अधिकारियों की यह निरंकुशता, यह स्वार्थपरता उन्हें असह्य हो गई। और यह कोई सिद्धांत की राजनैतिक लड़ाई न थी, जिसका प्रत्यक्ष स्वरूप जनता की समझ में मुश्किल से आता है।

अथवा

मैं कोई कुर्बानी नहीं कर रहा हूँ और न किसी की जिंदगी को खाक में मिला रहा हूँ। मैं सिर्फ उस रास्ते पर जा रहा हूँ, जिधर मेरी आत्मा मुझे ले जा रही है। मैं किसी रिश्ते या दौलत को अपनी आत्मा के गले की जंजीर नहीं बना सकता। मैं उन आदमियों में नहीं हूँ जो जिंदगी की जंजीरों को ही जिंदगी समझते हैं। मैं जिंदगी को आरजुओं को जिंदगी समझता हूँ। मुझे जिंदा रहने के लिए ऐसे दिन की जरूरत है, जिसमें आरजुएँ हों, दर्द हो, त्याग हो, सौदा हो।

2. पठित कहानियों के आधार पर प्रेमचंद की कहानी कला का उल्लेख कीजिए।

अथवा

'कर्बला' नाटक की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिये। (15)

3. "'सवा सेर गेहूँ' भारतीय समाज व्यवस्था में निहित शोषण और अन्याय की कहानी है।" इस कथन की परीक्षा कीजिए।

अथवा

'पंच परमेश्वर' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (15)

4. 'कलम का सिपाही' के आधार पर प्रेमचन्द के सामाजिक दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'कर्मभूमि' के अमरकांत का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(क) पंच परमेश्वर कहानी का कथा सार।

(ख) कलम का सिपाही की भाषिक विशेषता।

(ग) सुभागी कहानी की अंतर्वस्तु।

(घ) प्रेमचंद की कहानियों में दलित जीवन। (5+5=10)